International Journal of Arts, Humanities and Social Studies

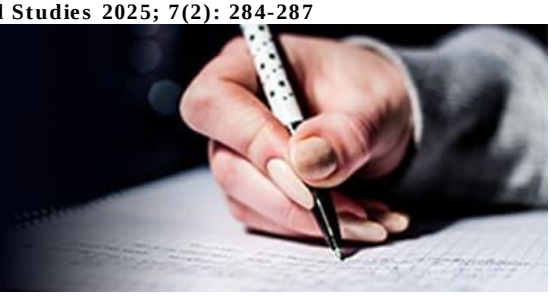

ISSN Print: 2664-8652
ISSN Online: 2664-8660
Impact Factor: RJIF 8
IJAHSS 2025; 7(2): 284-287
www.socialstudiesjournal.com
Received: 06-07-2025
Accepted: 07-08-2025

डॉ. राजकुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी–विभाग
जनता विद्या मन्दिर गणपतराय रासीवासिया महाविद्यालय, चरखी दादरी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. राजकुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी–विभाग
जनता विद्या मन्दिर गणपतराय रासीवासिया महाविद्यालय, चरखी दादरी, हरियाणा, भारत

रामधारी सिंह 'दिनकर' के युद्ध सम्बन्धी विचार और प्रभाव : एक विवेचन

राजकुमार

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26648652.2025.v7.i2d.311

सारांश
जिन दिनों कुरुक्षेत्र काव्य की रचना हो रही थी, उन्हीं दिनों हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बमों का पहले–पहल विस्फोट हुआ था। इस प्रकार कहा जा सकता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के भयंकर विनाश और विज्ञान के अनियन्त्रित प्रयोग ने उनको युद्ध की समस्या पर लिखने को बाध्य कर दिया।

कूटशब्द : क्रान्तिकारी, आक्रामक, युद्ध, समस्या, सिंहनाद।

प्रस्तावना

पूर्ण शोध पत्र

रामधारी सिंह 'दिनकर' को हिन्दी का ऐसा पहला कवि माना जाता है, जिसने 'युद्ध' को अपनी कविता का प्रतिपाद्य बनाया। दिनकर हिन्दी के पहले कवि हैं, जिन्होंने युद्ध को अपनी कविता का प्रतिपाद्य बनाया, उसके मूल कारणों तथा पक्ष–विपक्ष का विश्लेषण करके उससे उत्पन्न समस्याओं के समाधान की ओर इंगित किया। दिनकर की प्रमुख कविताओं जैसे–रेणुका, हुंकार, परशुराम की प्रतीक्षा, इतिहास के आँसू और प्रतिनिधि प्रबन्ध–काव्य कुरुक्षेत्र आदि में उन्होंने विस्तार से युद्ध की समस्या के बारे में लिखा है। दिनकर को युद्ध के सम्बन्ध में लिखने वाले कवि के रूप में मानने में हमें कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन यह प्रश्न सामने आता है कि वे क्या कारण और परिस्थितियों थी (?) जिनके मध्यनजर दिनकर युद्ध के सम्बन्ध में लिखने को विवश हुए तथा कौन से विद्वान और विचारक रहे हैं, जिन्होंने दिनकर को अपनी विचारधारा से प्रभावित किया है?

उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर के लिए निम्न तीन बिन्दुओं पर विचार किया जा सकता है:–

- **दिनकर क्रान्तिकारीधारा के कवि थे :–** दिनकर की काव्य–साधना का आरम्भ स्वाधीनता संग्राम के उस स्तर पर हुआ जब जन–मानस प्रबल राष्ट्रीय भावनाओं से आन्दोलित था। स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए सर्वस्व समर्पण की होड़ लगी हुई थी। विरोध विद्रोह, विध्वंस और विप्लव को लोगों ने अस्त्र के रूप में धारण कर लिया था। ऐसी परिस्थितियों में एक युवा कवि का युद्ध व क्रान्ति के बारे में लिखना सहज स्वाभाविक था।

  डॉ. सावित्री सिन्हा के शब्दो में – ''बिहार की विद्रोही राष्ट्रीय–चेतना के अग्निमय वातावरण में उनके कवि व्यक्तित्व का निर्माण हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी और मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं द्वारा उन्हें राष्ट्रीय कविता संस्कारण प्राप्त हुए।''[1] दिनकर को क्रान्तिकारी धारा के कवि के रूप में घोषित करते हुए श्री मन्मथनाथ गुप्त अपने विचार इस प्रकार व्यक्त करते हैं – ''दिनकर का उदय उस धारा से हुआ जो भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखन लाल चतुर्वेदी और बाल कृष्णा शर्मा नवीन से होकर बहती आ रही थी। दिनकर की रसग्राहिणी शिराएँ संस्कृत और बंगला से भी सम्पृक्त थी, अतएव एक ओर जहाँ उनमें कालिदास और रवीन्द्र का प्रभाव पहुँचा, वहाँ दूसरी ओर काजी नजरूल इस्लाम का आक्रामक और संक्रामक गर्जन और सिंहनाद भी उनकी आवाज की त्रिवेणी में आ मिला। नजरूल जोश और दिनकर भारत की क्रान्तिकारी कविता के बृहत्त्रयी के कवि हैं।[2]

  इस प्रकार कहा जा सकता है कि दिनकर का सम्बन्ध भारतीय क्रान्तिकारी धारा के कवियों से रहा और उन्हीं के अनुसार दिनकर ने भी क्रान्ति और युद्ध को अपने काव्य का विषय चुना।

ये कवि भारत को एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे और दिनकर भी अग्रेंज सरकार की सेवा में होते हुए एक सच्चे देश–भक्त थे और इसी कारण उन्होंने क्रान्ति तथा युद्ध के सम्बन्ध में अपनी कविताओं के माध्यम से काफी कुछ कहा है।

- **द्वितीय विश्व–युद्ध :–** द्वितीय विश्व युद्ध में हुए भीषण नर–संहार विध्वंस हाहाकार और त्रास ने दिनकर को इस विषय पर सोचने को बाध्य कर दिया। 'कुरुक्षेत्र' दिनकर जी का युद्ध के सम्बन्ध में प्रतिनिधि काव्य है। इसकी रचना द्वितीय विश्व युद्ध के अन्तिम दिनों में हुई थी। इन दिनों वे युद्ध–प्रचार विभाग में कार्यरत थे। दिनकर जी ने तत्कालीन मनोदशा की व्याख्या करते हुए बताया था ''रूस के आने से युद्ध का स्वरूप बदल गया इस प्रचार का मुझ पर असर तो पड़ा था। यदि में स्वयं ही युद्ध का समर्थक नहीं हो गया होता, तो अंग्रेज मेरा तबादला युद्ध–प्रचार विभाग में नहीं करते। फिर मैं यह भी समझता कि यही मौका है जब देश गुलामी का खूटा तोड़कर भाग सकता है। रूस का मैं परम प्रशंसक रहा था।[3]
  द्वितीय विश्व–युद्ध में पहली बार परमाणु बमों के रूप में इस संसार ने और स्वयं दिनकर जी ने विज्ञान के विनाशक प्रयोग को देखा था और इससे वे छटपटा गए थे। उन्होंने इसी कारण मनुष्य को सावधान करना अपना कर्तव्य समझा। वे 'कुरुक्षेत्र' में कहते हैं :–

  ''सावधान, मनुष्य। यदि विज्ञान है तलवार,
  तो इसे फेंक तज कर मोह, स्मृति के पार।''[4]
  इसी प्रसंग में दिनकर जी का स्वयं का कहना है कि –

''जिन दिनों कुरुक्षेत्र काव्य की रचना हो रही थी, उन्हीं दिनों हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बमों का पहले–पहल विस्फोट हुआ था।''[5] इस प्रकार कहा जा सकता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के भयंकर विनाश और विज्ञान के अनियन्त्रित प्रयोग ने उनको युद्ध की समस्या पर लिखने को बाध्य कर दिया।

- **अनेक विचारकों का प्रभाव :–** दिनकर जी पर अनेक भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों के विचारों का प्रभाव रहा है. जैसे महात्मा गांधी, तिलक, मार्क्स और रसेल। इनका संक्षेप में आकलन इस प्रकार हैः–

(क) महात्मा गांधी का प्रभाव :– महात्मा गांधी का प्रभाव दिनकर पर कितना और किस दिशा में पड़ा, इसका मूल्यांकन अति कठिन कार्य है। गांधी जी के दो रूप थे। उनका एक रूप विद्रोही का था, जो संसार के सबसे शक्तिशाली साम्राज्य को चुनौती दे रहा था। उनका दूसरा रूप संत का था, जो इस संघर्ष में तलवार उठाने वालों की निन्दा करता था। जहाँ तक विद्रोही गान्धी की बात है, हम दिनकर पर उनका प्रभाव स्पष्ट देखते हैं। दिनकर की नीति किसी वाद के प्रवाह से बह जाने अन्धानुकरण करने अथवा लकीर का फकीर बनने की नहीं थी। यही कारण है कि भावों कि विविधता पाई जाती है।[6] फिर भी गान्धी–दर्शन की अनेक बातें ऐसी थी जिनसे दिनकर प्रभावित हुए है, जैसे – गांधी जी की अहिंसा की नीति को वे भीष्म के मुख से कहलवाते हैं :–

मैं भी हूँ सोचता, जगत् से
कैसे उठे जिंघासा
किस प्रकार फैले पृथिवी
पर करुणा, प्रेम, अहिंसा।[7]

गांधी–दर्शन की अन्य प्रमुख बातों में कर्मयोग, आसक्ति में विश्वास, निर्भीकता आदि का दिनकर ने पूर्ण रूप से समर्थन किया है। हाँ, अलगाव है तो यहीं पर की गांधी जी हिंसा को किसी भी रूप में सहन नहीं कर सकते थे जबकि दिनकर ने सत्य और धर्म तथा हक की प्राप्ति के लिए इसका पूर्णत समर्थन किया है। अन्ततः यह कहा जा सकता है कि सत्य के मार्ग पर चलकर अन्याय के विरूद्ध सिर उठाना ही गांधी–मार्ग की प्रमुख विशेषता थी और यहाँ पर दिनकर पूर्णतः प्रभावित रहे हैं।

(ख) तिलक का प्रभाव :– 'कुरुक्षेत्र' दिनकर का युद्ध सम्बन्धी प्रतिनिधि प्रबन्ध–काव्य है। और इस पर सबसे अधिक प्रभाव तिलक का रहा है ''कुरुक्षेत्र को सबसे अधिक प्रभावित करने वाला रहस्य 'श्रीमद् भगवद् गीता' का वह रहस्य है, जो गीता–रहस्य अथवा कर्मयोग–शास्त्र नामक ग्रन्थ के यशस्वी रचयिता एवं अपने समय के सर्वप्रमुख राजनीतिज्ञ लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने उद्घाटित किया है।''[8] इसके अनेक तथ्य ऐसे हैं, जो कुरुक्षेत्र के कथानक से पूर्णतः मेल खाते हैं, जैसे–''गीता में अर्जुन को युद्ध में होने वाले स्वजन–संहार की कल्पना से मोह हुआ था..... ''कुरुक्षेत्र के युधिष्ठिर का मोह भी बहुत कुछ अर्जुन जैसा ही है और भीष्म को कृष्ण का स्थानापन्न बनना पड़ा है।''[9] इसी प्रकार कर्म की महत्ता भी दोनों में समान है ''गीता में कर्म की अनिवार्यता स्वीकार की गई है। कुरुक्षेत्र में भी कर्म को अपरिहार्य माना गया है।''[10]

''क्रिया–धर्म को छोड़ मनुज
कैसे निज सुख पाएगा?
कर्म रहेगा साथ, भाग वह
जहाँ कहीं जाएगा।''[11]

'गीता–रहस्य' में एक तथ्य स्पष्ट है कि ''अहिंसा, तपस्या, त्याग आदि सद्वृत्तियों की भी एक सीमा है।''[12] यही कुरुक्षेत्र में दिनकर का कहना है –

(क) ''त्याग, तप, करुणा, क्षमा से भीग कर,

व्यक्ति का मन तो बली होता, मगर,
हिंस्र पशु जब घेर लेते हैं उसे,
काम आता है बलिष्ठ शरीर ही।''[13]

(ख) कौन केवल आत्मबल से जूझकर

जीत सकता देह का संग्राम है?
पाशविकता खडग जब लेती उठा
आत्म–बल का एक वश चलता नहीं।''[14]

अन्ततः डॉ. सावित्री सिन्हा के शब्दों में कहा जा सकता है कि –''कुरुक्षेत्र की विचार–भूमि पर तिलक जी के बीज ही लहलहा रहे हैं। तिलक के इस प्रभाव की खण्डशः अभिव्यक्ति की अपेक्षा कवि के समग्र चिन्तन पर ही उसकी प्रभावान्विति विशेष रूप से द्रष्टव्य है.. और कवि इस अविस्मरणीय प्रभाव के कारण तिलक का अत्यधिक ऋणी है।''[15]

(ग) मार्क्स का प्रभाव :– हमारे भौतिक जीवन के दुखों का मूल कारण है, समाज के अर्थतंत्र की दोषपूर्ण रचना। उत्पादन और वितरण प्रणाली के दोषपूर्ण होने के कारण, बाहुल्य के बीच भी संसार दुःखी है।[16]
कार्ल मार्क्स ने श्रमजीवी–वर्ग को समाज के अर्थ–तन्त्र और शासन–तन्त्र का स्वामी बनाने का सुझाव दिया। उन्होंने अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए अपने विरोधी, स्वार्थ में लीन बड़े–बड़े पूँजीपतियों उद्योगपतियों या भूस्वामियों से संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया – ''अपने शोषकों के प्रति युद्ध करना, अपने

अधिकारों के लिए लड़ना और अत्याचारों को न सहना ही प्रत्येक शोषित–पीड़ित व्यक्ति का धर्म है। मनुष्य को भाग्यवादी नहीं बनना चाहिए। वे कुरुक्षेत्र में मार्क्स की विचारधारा का खुला समर्थन करते हुए कहते हैं :–

(क) ''किसने कहा, पाप है समुचित

स्वत्व–प्राप्ति–हित लड़ना?
उठा न्याय का खडग समर में
अभय मारना मरना।''[17]

(ख) ''छीनता हो स्वत्व कोई, ओर तू

त्याग–तप से काम ले यह पाप है।
पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे
बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ हो।''[18]

कवि अन्याय या अत्याचार का विरोध करना पीड़ित, शोषित और दुर्बल जनों का जन्म–सिद्ध अधिकार मानता है। साम्यवाद हिंसा के साधन को स्वीकार करता है और साधन की पवित्रता को आवश्यक मानता है। दिनकर जी इसी विचार का समर्थन करते हुए कहते हैं कि तप, त्याग करुणा व्यक्ति के धर्म हैं, विनय और त्याग से उसकी शोभा बढ़ती है लेकिन इसका निर्वाह वह सभी अवसरों पर नहीं कर सकता। समुदाय का प्रश्न सम्मुख उपस्थित होने पर अपनी तप, त्याग–भावना को भूल जाना पड़ता है।

''जो निरामय शक्ति है तप, त्याग में,
व्यक्ति का ही मन उसे है मानता,
योगियों की शक्ति से संसार में,
हारता लेकिन नहीं समुदाय है।''[19]

इसी प्रकार राजतन्त्र को विरोध भाग्यवाद का विरोध आदि अनेक प्रश्न उन्होंने उठाए हैं, जिन पर मार्क्स की विचारधारा का सीधा प्रभाव देखा जा सकता है।

(घ) रसेल का प्रभाव :– कान्तिमोहन शर्मा का कथन है – ''कुरुक्षेत्र में वर्णित युद्ध, समाज, विज्ञान नीति आदि विषयक विचारों पर सबसे अधिक प्रभाव रसेल का पड़ा है। कवि ने साथ ही मुझे रसेल का साहित्य पढ़ने का संकेत दिया था और बतलाया था कि 'कुरुक्षेत्र' रचनाकाल में उन्होंने रसेल का विशेष अध्ययन किया था, तथा रसेल ने उन्हें बहुत प्रभावित भी किया था।''[20] इसी विचार के परिप्रेक्ष्य में यदि हम कुरुक्षेत्र के षष्ठ–सर्ग को देखें तो लगता है कि यह कथन काफी हद तक समीचीन है।

रसेल के अनुसार :– ''विज्ञान स्वयं में निरपेक्ष है – न अच्छा न बुरा टेक्नीक के प्रयोग के आधार पर ही हम उसे अच्छा या बुरा कह सकते हैं। शिवत्व की भावना से प्रेरित होने पर वह बड़े–से–बड़ा निर्माण कर सकता है और अमंगल की भावना से प्रेरित होकर बड़े–से–बड़ा विनाश भी।''[21]

'कुरुक्षेत्र' के षष्ठ–सर्ग में कवि इस विचारधारा को स्वीकार करते हैं:–

''इस मनुज के हाथ में विज्ञान के भी फूल,
वज्र होकर छुटते, शुभ धर्म अपना मूल।''[22]

रसेल का कथन है कि:– ''हम अत्यधिक जानते हैं लेकिन अति–अल्प अनुभव करते हैं। इसके परिणाम स्वरूप हम उन रचनात्मक संवेगों के बारे में बहुत कम अनुभव कर पाते हैं, जिनमें से आदर्श जीवन का विकास होता है। जहाँ हमें समझना या जानना चाहिए वहाँ हम निष्क्रिय रहते हैं और जहाँ हल्कापन (अर्थात् जहाँ जानने की आवश्यकता नहीं होती) होता है वहीं सक्रिय हो जाते हैं।''[23] इसी प्रकार के विचार हमें कुरुक्षेत्र में देखने को मिलते हैं। कवि इस बात से क्षुब्ध है कि मानव को अपने श्रेय का ज्ञान नहीं है तथा मस्तिष्क के सामने हृदय लघु हो गया है :–

(क) ''रसवती भू के मनुज का श्रेय

यह नहीं विज्ञान, विद्या–बुद्धि यह आग्नेय।''[24]

(ख) ''श्रेय उसका बुद्धि पर चैतन्य उस की जीत,

श्रेय मानव की असीमित मानवों से प्रीत,
एक नर से दूसरे के बीच का व्यवधान
तोड़ दे जो है वही ज्ञानी, वही विद्वान,
और मानव भी वही।''[25]

(ग) ''किन्तु, है बढ़ता गया मस्तिष्क ही निःशेष,

छूट कर पीछे गया है रह हृदय का देश,
नर मानता नित्य नूतन बुद्धि का त्योहार,
प्राण में करते दुखी हो देवता चीत्कार।''[26]

रसेल को इस बात की आशंका है कि विध्वंस का प्रमुख सहयोगी होने के कारण किसी दिन विज्ञान के विरूद्ध कोई आन्दोलन छिड़ सकता है। वर्तमान समय में यदि विज्ञान के विनाशक प्रयोग के परिणाम स्वरूप इसके प्रतिकूल कोई आन्दोलन छिड़ जाता है तो यह आश्चर्य की बात नहीं होगी। यह आन्दोलन मानव जीवन के विनाश के उत्तरदायी अणु–बम्बों या जीवाणु–बम्बों के प्रयोग के दाय के रूप में हो सकता है।''[27] 'कुरूक्षेत्र' का कवि उससे एक कदम आगे बढ़कर यह आन्दोलन छेड़ देता है और मनुष्य को विज्ञान का मोह त्यागने को कहता है :–

''सावधान, मनुष्य। यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तज कर मोह स्मृति के पार।
हो चुका है सिद्ध, है तू शिशु अभी नादान,
फूल–काँटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान।
खेल सकता तू नहीं ले हाथ तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।''[28]

रसेल का प्रभाव कवि के विज्ञान सम्बन्धी विचारों पर ही नहीं है, बल्कि व्यक्ति और सत्ता से सम्बद्ध विचारों पर भी है। उनका कहना है कि ''मैं इस बात को अस्वीकार नहीं करता कि ऐसी परिस्थियाँ हो सकती हैं जिनमें कानून तोडना कर्त्तव्य बन जाए। ऐसा तब हो सकता है जब मानव गम्भीरता से यह सोचने लगे कि कानून को मानना पाप बन गया है।''[29] कुरुक्षेत्र के कवि रसेल से सहमत होते हुए कहते हैं–

''न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिलें तो लड़ के
तेजस्वी छीनते समर को
जीत, या कि खुद मरके।''[30]

रसेल के मनोविज्ञान सम्बन्धी विचारों का प्रभाव भी 'कुरुक्षेत्र' पर लक्षित होता है। रसेल मानते हैं कि मानव में चिरकाल से चली आ रही पाशविक वृत्तियों के शमन के बिना न तो विश्व में एकता ही आ सकती है, और न युद्ध का ही निराकरण किया जा सकता

है। उनका कहना है कि ''समय आ गया है कि इस युद्ध के बारे में गम्भीरता से सोचें और इसे सदा के लिए समाप्त कर दें। हम अपनी सभी समस्याओं को शान्तिपूर्वक सहज–प्रवृत्ति के साथ सुलझाए अन्यथा युद्ध होते रहे तो हमें इसके दाय के रूप में लम्बी हिंसक जाति ही मिलेगी।'[31]

अतः कहा जा सकता है कि युद्ध के कारण, मानव मनोविज्ञान और युद्ध की अनिवार्यता आदि अनेक ऐसे बिन्दु हैं, जहाँ पर दिनकर जी रसेल के विचारों से काफी हद तक सहमत है और कुरुक्षेत्र की रचना में उन्होंने रसेल के प्रभाव को स्वयं भी स्वीकार किया है।

I do not deny that there are situations in which law & breaking becomes a duty. It is a duty when man profoundly belives that it would be din to obey.

निष्कर्ष

रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य कुरूक्षेत्र का निष्कर्ष यह है कि युद्ध एक निंदनीय और क्रुर धर्म है लेकिन न्याय और अत्याचारी के दमन के लिए युद्ध करना धर्म या पुण्य हो सकता है, जो कि कर्मवाद और मानव सेवा के विचार को दर्शाता है। कवि का संदेश है कि मनुष्य को क्षुद्र स्वार्थों से ऊपर उठकर, मानवता के कल्याण के लिए सक्रिय और कर्मनिष्ठ होना चाहिए। सच्ची शांति केवल हृदय से ही उत्पन्न हो सकती है, तलवार से नहीं।

दिनकर युद्ध को घृणित मानते हैं, परन्तु वे अन्याय और अत्याचार को सहने की निवृत्ति या वैराग्य का भी खंडन करते हैं। उनका मानना है कि अन्यायपूर्ण सत्ता को हटाने और न्याय स्थापित करने के लिए युद्ध कई बार अनिवार्य हो जाता है। कुरूक्षेत्र का केंद्रीय भाव कर्मवाद है। व्यक्ति को अपने कर्मों से दूसरों के जीवन को प्रकाशित करना चाहिए। यह दूसरों के लिए जीना और उनकी सेवा करना ही मनुष्य का धर्म है। कवि का प्रतिपाद्य है कि मनुष्य अपने स्वार्थों को छोड़कर मानवता के उत्थान के लिए कार्य करे।

कवि युद्ध और शांति समस्या पर गहनता से विचार करते हुए कहते हैं कि युद्ध की समस्या मनुष्य की एक पुरानी समस्या है, जो समाज में अशांति और संघर्ष को उत्पन्न करती है। वे इस विचार का खंडन करते हैं कि मनुष्य का अंतिम लक्ष्य केवल वैराग्य और निवृत्ति है बल्कि मनुष्य का धर्म सामूहिक हित के लिए कार्य करना है।

संदर्भ

1. सिन्हा, डॉ0 सावित्री (1967, सम्पादिका 'दिनकर'), राधा कृष्ण प्रकाशन, अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली–6, पृ0 114
2. गुप्त, मन्मथनाथ (1978), रामधारी सिंह 'दिनकर', राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ0 10
3. वही, पृ0 24
4. दिनकर, रामधारी सिंह (1994), कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ0 83
5. वही, पृ0 134
6. जैन, डॉ0 प्रतिमा (1980) दिनकर : काव्य कला और दर्शन, मन्थन प्रकाशन, रामबाग, कानपुर–12, पृ0 329
7. दिनकर, रामधारी सिंह (1994), कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ0 32
8. सिन्हा, डॉ0 सावित्री (1967, सम्पादिका 'दिनकर'), राधा कृष्ण प्रकाशन, अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली–6, पृ0 149
9. वही, पृ0 149
10. वही, पृ0 150
11. दिनकर, रामधारी सिंह (1994), कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ0 111
12. सिन्हा, डॉ0 सावित्री (1967, सम्पादिका 'दिनकर'), राधा कृष्ण प्रकाशन, अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली–6, पृ0 154
13. दिनकर, रामधारी सिंह (1994), कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ0 21
14. वही, पृ0 21
15. सिन्हा, डॉ0 सावित्री (1967, सम्पादिका 'दिनकर'), राधा कृष्ण प्रकाशन, अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली–6, पृ0 156
16. जैन, डॉ0 प्रतिमा (1980) दिनकर : काव्य कला और दर्शन, मन्थन प्रकाशन, रामबाग, कानपुर–12, पृ0 265
17. दिनकर, रामधारी सिंह (1994), कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ0 26
18. वही, पृ0 18
19. वही, पृ0 21
20. सिन्हा, डॉ0 सावित्री (1967, सम्पादिका 'दिनकर'), राधा कृष्ण प्रकाशन, अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली–6, पृ0 135
21. वही, पृ0 135
22. दिनकर, रामधारी सिंह (1994), कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ0 82
23. सिन्हा, डॉ0 सावित्री (1967, सम्पादिका 'दिनकर'), राधा कृष्ण प्रकाशन, अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली–6, पृ0 137
24. दिनकर, रामधारी सिंह (1994), कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ0 83
25. वही, पृ0 82
26. वही, पृ0 78
27. सिन्हा, डॉ0 सावित्री (1967, सम्पादिका 'दिनकर'), राधा कृष्ण प्रकाशन, अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली–6, पृ0 138
28. दिनकर, रामधारी सिंह (1994), कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ0 83
29. सिन्हा, डॉ0 सावित्री (1967, सम्पादिका 'दिनकर'), राधा कृष्ण प्रकाशन, अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली–6, पृ0 138
30. दिनकर, रामधारी सिंह (1994), कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ0 26
31. सिन्हा, डॉ0 सावित्री (1967, सम्पादिका 'दिनकर'), राधा कृष्ण प्रकाशन, अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली–6, पृ0 142